दलाई लामा को जन्मदिन की कृतज्ञतापूर्ण बधाई

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
पत्रकार एवं अध्यक्ष, राजनीति विज्ञान विभाग
राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, खेतड़ी (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail & facebook:- shyamnathji@gmail.com

परमपावन दलाई लामा के 88वें जन्म दिवस पर विश्व के विभिन्न देशों में अनेक कार्यक्रम आयोजित हुए। गत 06 जुलाई 2023 को आयोजित कार्यक्रमों में तिब्बती समुदाय एवं तिब्बत समर्थकों के साथ ही ऐसे स्थानीय लोग भी शामिल हुए जो चीन की विस्तारवादी तथा लोकतंत्र विरोधी नीति के विरोधी हैं। इससे स्पष्ट है कि साम्राज्यवादी चीन की दमनात्मक नीति का विरोध विश्व जनमत के लिये महत्वपूर्ण प्रश्न है। इस वर्ष भी दलाई लामा को जन्म दिन की बधाई दी गई। उनके दीर्घ जीवन हेतु प्रार्थना की गई। सभी ने कामना की कि वे सदैव स्वस्थ, तथा सक्रिय रहें। वे हमेशा अपने आध्यात्मिक उपदेश एवं प्रवचनों से समाज में मानवीय मूल्यों को मजबूत करते रहें।

दलाई लामा का जन्मदिन उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट करने का अवसर होता है। चीन ने सन् 1959 में जब तिब्बत पर अवैध नियंत्रण कर लिया उस समय दलाई लामा तिब्बत के धर्मप्रमुख और राजप्रमुख दोनों थे। किसी अन्य देश में नहीं जाकर उन्होंने भारत में शरण ली। वे अपने हजारों तिब्बती समर्थकों के साथ भारत आ गए। वे कहते हैं कि भगवान बुद्ध के विचार भारत से ही तिब्बत पहुँचे थे। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय में तिब्बती अध्ययन करने आते थे। इस प्रकार वे भारत को तिब्बत का गुरु कहते हैं और तिब्बत को भारत का चेला। उनके अनुसार भारत एवं तिब्बत के संबंध गुरु–शिष्य संबंध हैं।

दलाई लामा का अपने गुरुगृह भारत में रहने का निर्णय सही सिद्ध हुआ। वे भारत को अपना दूसरा घर कहते हैं। वे गर्वपूर्वक और कृतज्ञता के साथ कहते हैं कि सन् 1959 से ही भारत सरकार, विभिन्न प्रांतीय सरकारों तथा भारतीय जनता का भरपूर सहयोग एवं समर्थन लगातार मिल रहा है। इसके परिणामस्वरूप निर्वासन में रहकर भी तिब्बती अपनी संस्कृति, परंपरा तथा पहचान को बचाये हुए हैं। भारत स्थित तिब्बती शिक्षण संस्थान तथा अन्य आध्यात्मिक मठ–मंदिर इन्हें सुरक्षित रखे हुए हैं। भारत स्थित सभी तिब्बती सेटलमेंट अर्थात् आवासीय क्षेत्रों में कोई भी जाकर ऐसा देख सकता है। दलाई लामा को पूर्ण विश्वास है कि भारत सरकार और भारतीय लोगों का सहयोग–समर्थन भविष्य में जारी रहेगा। तिब्बती सघर्ष में तिब्बत का गुरु भारत हमेशा अपने शिष्य तिब्बत के साथ रहेगा।

गत 06 जुलाई 2023 को कृतज्ञता ज्ञापन की होड़ लगी थी। एक ओर तिब्बती समुदाय भारतीयों के प्रति कृतज्ञता प्रकट कर रहा था वहीं भारतीय लोग तिब्बतियों, विशेषकर दलाई लामा के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर रहे थे। भारतीयों के अनुसार भारत में रहकर दलाई लामा भारतीय संस्कृति को मजबूत कर रहे हैं। उनकी प्रेरणा–प्रोत्साहन–आशीर्वाद से प्राचीन नालंदा परंपरा पुनर्जीवित हो गई है। तिब्बती शिक्षण संस्थानों में भारतीय बच्चे भी बड़ी संख्या में

अध्ययन कर रहे हैं। ये शिक्षण संस्थान संस्कृत के अनेक लुप्तप्राय ग्रंथों को पुनः प्रकाशित कर रहे हैं। ये भोटी के कई लुप्तप्राय ग्रंथों को संस्कृत में तथा संस्कृत के ऐसे लुप्तप्राय ग्रंथों को भोटी में उपलब्ध करा रहे हैं। ज्ञान–विज्ञान के नवीनतम क्षेत्रों में भी यहाँ उपयोगी साहित्य रचे जा रहे हैं। आधुनिकतम वैज्ञानिक उपकरणों, तकनीकों तथा शोध सामग्री का प्रयोग कर यहाँ लोककल्याणकारी साहित्य प्रकाशित–प्रचारित–प्रसारित किये जा रहे हैं। इस प्रकार दलाई लामा के आध्यात्मिक प्रवचनों से प्रेरित ये तिब्बती संस्थान प्राचीन भारतीय संस्कृति की नालंदा परंपरा को विश्व स्तर पर सुरक्षित–संवर्धित कर रहे हैं।

दलाई लामा के व्यक्तित्व–कृतित्व का आभारी संपूर्ण विश्व है। उनके जन्मदिन से जुड़े आयोजनों में विश्वभर के लोगों ने उन्हें शांति–अहिंसा का पुजारी कहा। विश्व के अनेक देशों की संसद को दलाई लामा संबोधित कर चुके हैं। कई देश उन्हें अपने सर्वोच्च नागरिक सम्मान प्रदान कर चुके हैं। विभिन्न राष्ट्रीय–अंतरराष्ट्रीय सम्मान–पुरस्कार प्राप्त दलाई लामा विश्व शांति के क्षेत्र में नोबल पुरस्कार प्राप्त कर चुके हैं। वास्तव में ये सभी सम्मान–पुरस्कार उन्हें विभिन्न संगठनों, सस्थाओं तथा देशों ने उनके योगदान के लिये प्रदान किये हैं।

दलाई लामा कहते है कि सर्वाधिक महत्वपूर्ण हैं मानवीय मूल्य। शांति, अहिंसा, करुणा, मैत्री, सहयोग तथा सद्भाव मानवीय मूल्य हैं। धार्मिक के साथ–साथ धर्मविरोधी एवं विधर्मी लोगों का काम भी इन मूल्यों के बिना नहीं चलेगा। ये सबके लिये समान रूप से जरूरी हैं। कोई किसी भी रिलिजन (पंथ, पूजा पद्धति, उपासना पद्धति, मजहब, मत, संप्रदाय) को माने उसे इन मूल्यों को महत्व देना ही होगा। इनके अभाव में समाज चल नहीं सकता। जहाँ तक रिलिजन की बात है, अपने रिलिजन के अनुरूप अपना आचार–विचार–व्यवहार रखो। साथ ही अन्य सभी रिलिजन का सम्मान करो। अपने रिलिजन को सर्वश्रेष्ठ तथा अन्य सभी रिलिजन को नीचा प्रमाणित करने के प्रयास ही मजहबी संघर्ष के कारण हैं। इससे बचने का उपाय है सर्वपंथसमादर भाव। दलाई लामा, जो कि स्वयं बौद्ध मतावलंबी हैं, अपने विभिन्न बौद्ध कार्यक्रमों में अन्य मतावलंबियों को बुलाते हैं। उनके कार्यक्रमों में सिक्ख, जैन, इसाई आदि अनेक मतावलंबी शामिल होते हैं। इसी प्रकार दलाई लामा स्वयं भी उन अन्य मतावलंबियों के कार्यक्रमों में जाते रहते हैं। यह है सर्वपंथसमादर भाव का उदाहरण। यही है सेकुलर होने का प्रमाण।

दलाई लामा तिब्बती समुदाय द्वारा लोकतांत्रिक मतदान से निर्वाचित तिब्बत सरकार को अपने राजनैतिक अधिकार सौंप चुके हैं। इसके बावजूद विश्व समुदाय आश्वस्त है कि दलाई लामा की प्रेरणा से तिब्बती संघर्ष शांतिपूर्ण एवं अहिंसक रहेगा। इसीलिये विश्व समुदाय तिब्बती संघर्ष के साथ है ताकि उपनिवेशवादी चीन सरकार तिब्बत समस्या को शीघ्र निपटाये।